हिन्दी-शिक्षण ① B.Ed. = IInd Year - 2018-2020 डॉ० दिनेश सिंह यादव (वी०एस०-एस०प्रोफेसर)

20/4/2020

गद्य-शिक्षण की पाठ योजना की प्रक्रिया (सोपान)

गद्य-शिक्षण की पाठ योजना में गद्य-शिक्षण के उन्ही सामान्य उद्देश्यों का उल्लेख करना होता है, जिनका सम्बन्ध प्रस्तुत गद्यांश से होता है। इसके पश्चात् गद्यांश शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्यों को लिखना चाहिए। जो व्यावहारिक रूप में लिखे जाते हैं जिसमें मानदण्ड परीक्षा द्वारा उनकी प्राप्ति का आकलन किया जा सके।

(i) पूर्व ज्ञान :-
छात्रों के उस पूर्वज्ञान या सन्दर्भ का उल्लेख किया जाता है। जिसे आधार बनाकर पाठ की प्रस्तावना की जाती है। शिक्षक पूर्वज्ञान के आधार पर प्रश्न पूँछता है। छात्रों के उत्तर की सहायता से शिक्षण की प्रस्तावना करता।

(ii) सहायक सामग्री :-
छोटी कक्षाओं में सहायक सामग्री के द्वारा प्रस्तावना का आरंभ किया जा सकता है।

(iii) लेखक से सम्बन्धित कथन :-
इसके द्वारा छात्राध्यापक लेखक के जीवन से सम्बन्धित किसी महत्वपूर्ण घटना का उल्लेख करता है या कहता है और "आज हम उन्ही के द्वारा लिखे गए पाठ का अध्ययन करेंगे" इसका प्रयोग केवल बड़ी कक्षाओं में ही किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

(iv) प्रस्तावना प्रश्न :-

प्रश्नोत्तर के द्वारा पाठ की ओर ध्यान केन्द्रित करने के लिए किया जाए। पूर्व ज्ञान पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं।

(1) प्रस्तुतीकरण :-

गद्य के पाठ प्रायः बड़े होते हैं इसलिए पाठों को भावों की समानता की दृष्टि से दो या दो से अधिक भागों में विभाजित करना चाहिए। प्रस्तुतीकरण में विद्यार्थियों के सामने प्रकरण प्रस्तुत किया जाता है। उद्देश्य कथन के समाप्त होने के बाद विद्यार्थी का ध्यान नवीन पाठ पर केन्द्रित हो जाता है। इसलिए अब शिक्षक का कार्य ज्ञान का प्रस्तुतीकरण करना हो जाता है। परन्तु समस्या यह है कि नवीन पाठ को किस प्रकार प्रस्तुत किया जाए? इस प्रसंग में विद्वानों के विभिन्न मत निम्न लिखित हैं।

1. शिक्षक के आदर्श पाठ के माध्यम से,
2. शब्दों के अर्थ द्वारा
3. मौन वाचन द्वारा

(2) उद्देश्य कथन :-

प्रस्तावना के अन्त में ही विद्यार्थी को पाठ के उद्देश्य का आभास प्राप्त हो जाता है। लेकिन फिर भी शिक्षक को नवीन पाठ के उद्देश्य का स्पष्टीकरण करना चाहिए। उद्देश्य का स्पष्टीकरण हो जाने से विद्यार्थी उत्साहित होते हैं तथा उसे प्राप्त करने के लिए सजग हो जाते हैं। परन्तु उद्देश्य कथन अधिक बड़ा नहीं होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

(4) आदर्श वाचन :-
शिक्षक को आदर्श वाचन की ओर मुख्य रूप से ध्यान देना चाहिए तथा उस पाठ का वाचन प्रभावशाली ढंग से करना चाहिए। आदर्श वाचन करते समय शिक्षक को निम्न लिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए :-
(i) जिस समय शिक्षक वाचन कर रहा हो, उस समय विद्यार्थी पुस्तक खोलकर नहीं देखें बल्कि पुस्तक को बन्द करके शिक्षक की ओर देखें।

(ii) शिक्षक की मुख आकृति के द्वारा विद्यार्थी भाव समझ सकेंगे और उच्चारण तथा पढ़ने की गति की ओर ध्यान रहेगा। जिससे वह अनुकरण वाचन के लिए तैयार रहेगा।
(iii) वाचन करते में शिक्षक का खड़े होने ढंग एवं पुस्तक पकड़ने का ढंग पर ध्यान देना चाहिए।
(iv) बांये हाथ में पुस्तक लेकर दाँये हाथ को स्वतन्त्र संचालन के लिए छोड़ दिया जाए।
(v) वाचन करते समय विराम चिन्हों का एवं भाव के अनुसार उतार-चढाव का ध्यान रखना चाहिए।
(vi) वाचन का मुख्य आधार शुद्ध उच्चारण एवं प्रभावपूर्ण वाणी में गद्य पाठ को पढ़ना।

(4) उच्चारण अभ्यास :- उच्चारण की दृष्टि से कठिन शब्दों का उच्चारण करवाना।

(5) अनुकरण वाचन :- छात्रों में वाचन कौशल के विकास की दृष्टि से अनुकरण वाचन करवाना चाहिए।

(6) कठिन शब्द निवारण :- पाठ में आये कठिन शब्दों का विभिन्न विधियों द्वारा अर्थ निकलवाना।

Scanned with CamScanner

(7) मौन पठन :→

प्रस्तुतीकरण के पश्चात् मौन पठन कराया जा सकता है। जिससे बालकों को इसी समय से पठन-दक्षता के लिए प्रशिक्षित किया जा सके। मौन पाठ समय शिक्षक निरीक्षण करता रहेगा। कि बालक उचित आसन एवं मुद्रा में, उचित रीति से (बिना होंठ हिलाए या बुदबुदाए) पढ़ रहे हैं।

(8) विचार विश्लेषणात्मक प्रश्न:-

केन्द्रीय भाव ग्रहण या विचार योग्यता के विकास की दृष्टि से पाठ से सम्बन्धित प्रश्न पूछना चाहिए।

(9) भाषा कार्य:-

गद्य शिक्षण का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह भी है कि पाठ के साथ-साथ प्रासंगिक व्याकरण का भी ज्ञान दिया जाए। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए कक्षा में भाषा कार्य करवाना चाहिए।

इस सोपान के मुख्यतः दो अंग हैं:-

(A) भाषा सम्बन्धी शिक्षण

(B) विषय-सामग्री सम्बन्धी शिक्षण:-

भाषा सम्बन्धी शिक्षण:

इसमें शब्द भण्डार की अभिवृद्धि मुख्य कार्य है। पाठ में आए हुए कठिन एवं अपरिचित शब्दों के आधार पर शिक्षक इसका प्रयत्न करता है। इसकी अनेक विधियाँ हैं:—

(i) पर्यायवाची तथा समानार्थी शब्द द्वारा (ii) अनेकार्थी शब्दों का ज्ञान द्वारा
(iii) सहचर शब्द (iv) वाक्य-प्रयोग द्वारा (v) प्रसंग कथन द्वारा
(vi) विलोम शब्द द्वारा (vii) सन्धि अथवा समास विच्छेद द्वारा
(viii) रूपक या प्रतीकात्मक शब्दों की व्याख्या (ix) व्याख्या, परिभाषा और उदाहरण द्वारा
(x) व्युत्पत्ति द्वारा (xi) मुहावरों, कहावतों द्वारा

विषय सामग्री सम्बन्धी शिक्षण :-

इसके अन्तर्गत वस्तुबोध, व्याख्या, स्पष्टीकरण, विचार-विश्लेषण, सराहना, समीक्षा आदि सम्बन्धी प्रश्न आते हैं। सामान्य अर्थ के साथ-साथ विशेष एवं लाक्षणिक ~~अर्थ~~ अर्थों को भी स्पष्ट कराने का प्रयत्न करना चाहिए।

विषय-सामग्री के बोध में व्याख्या का विशेष महत्व है। भाषा एवं अर्थ की दृष्टि से किसी कठिन बात को सरल करके समझाना ही व्याख्या है। शिक्षक को व्याख्या करने में बालकों में निम्नांकित ध्यान रखना आवश्यक है :-

(i) व्याख्या करने में सरल भाषा का प्रयोग अपेक्षित है अन्यथा व्याख्या का उद्देश्य नष्ट हो जाता है।
(ii) व्याख्या स्पष्ट, क्रमयुक्त एवं सुसम्बद्ध हो।
(iii) बालकों की योग्यता को ध्यान में रखकर व्याख्या करनी चाहिए।
(iv) जो बातें बालक स्वयं समझ सकें उनकी व्याख्या अनावश्यक रूप से नहीं करनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

(v) व्याख्या को रोचक एंव सजीव बनाने के लिए आवश्यक उदाहरणों एंव दृष्टान्तों का प्रयोग करना चाहिए।

(vi) व्याख्या के बीच-बीच में छात्रों को प्रश्न पूछने अथवा अपनी कठिनाई प्रस्तुत करने का अवसर देना चाहिए।

(vii) व्याख्या करते समय बालकों का ध्यान मुख्य-विषय, प्रसंग की ओर आकृष्ट करना चाहिए।

(viii) व्याख्या उपेदशात्मक नहीं होनी चाहिए।

(ix) व्याख्या के उपरांत प्रश्नों द्वारा यह जाँच लेनी चाहिए कि छात्रों ने समझ लिया है या नहीं। यदि कुछ कमी प्रतीत हो तो उन्हे पुनः समझा देना चाहिए।

(x) शिक्षक को ध्यान रखना चाहिए कि शब्दार्थ तथा भाषा-कार्य इस वस्तु के बोध एंव विचार-विश्लेषण में सहायक है। अतः दोनों कार्य एक संगति एंव क्रमायोजित रूप में हों।

(10) पुनरावृत्ति अथवा अनुमूल्यन :-

पाठ शिक्षणोपरांत सम्पूर्ण पाठ पर आधारित कुछ प्रश्नों द्वारा बालकों के वस्तु बोध एंव अर्जित भाषा ज्ञान के परीक्षण के लिए प्रश्न पूछे जाते है। यह पाठ विकास के समय,

Scanned with CamScanner

पूछे गए प्रश्नों से भिन्न होते हैं। इनमें वस्तुनिष्ठ एवं संक्षिप्त उत्तर वाले प्रश्न अधिक उपयोगी होते हैं।

(11) श्यामपट्ट लेखन :-

पाठ विकास के साथ-साथ बताए गए शब्द, अर्थ, प्रयोग विशिष्ट या विचार आदि का उल्लेख श्यामपट्ट पर किया जाता है। छात्र इन्हें अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिख ले लेते हैं।

गृह कार्य :-

(12) प्रस्तुत पाठ सम्बन्धी कार्य जैसे :- शब्द रचना, प्रयोग, भावाभिव्यक्ति सारांश आदि घर से पूरा कर लेने के लिए छात्रों को दिया जाता है यही इसका मुख्य उद्देश्य होता है।

डा० दिनेश सिंह यादव
बी०एड० विभाग (असि०प्रोफेसर)
(हिन्दी शिक्षण)
B.Ed- IInd Year - 2018-2020

Scanned with CamScanner